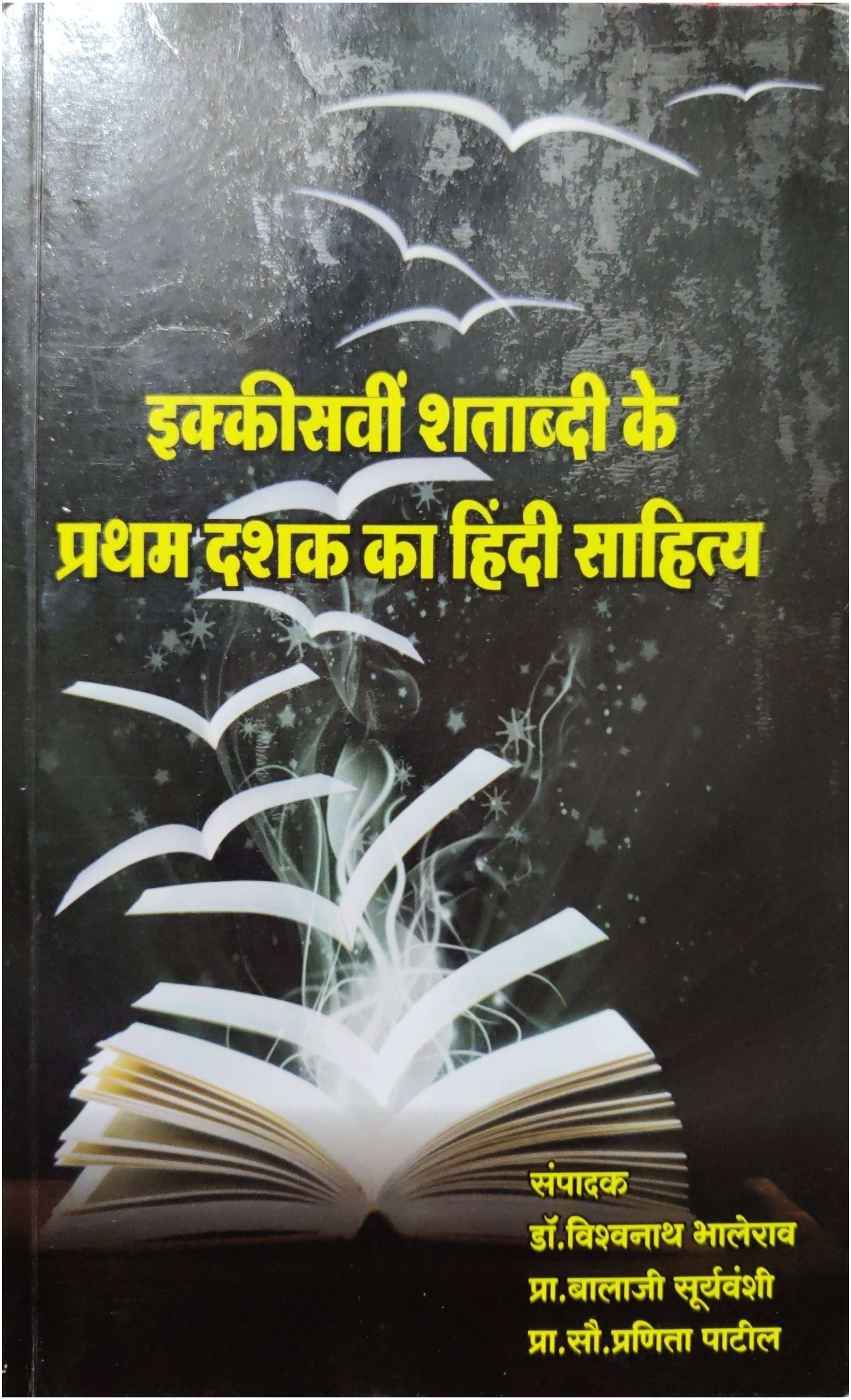
इक्कीसवीं शताब्दी के
प्रथम दशक का हिंदी साहित्य
संपादक
डॉ.विश्वनाथ भालेराव
प्रा.बालाजी सूर्यवंशी
प्रा.सौ.प्रणिता पाटील

इक्कीसवीं शताब्दी के प्रथम दशक का हिंदी साहित्य

संपादक : डॉ.विश्वनाथ भालेराव
प्रा.बालाजी सूर्यवंशी
प्रा.सौ.प्रणिता पाटील

© संपादक

ISBN : 978-93-84470-05-0

प्रकाशक - बालासाहेब घोंगडे
प्रकाशन - अक्षर वाङ्मय प्रकाशन, पुणे-०४

संस्करण : प्रथम
फरवरी २०१५

मूल्य : ३००/-

शब्दसज्जा : सूरज चौधरी, उदगीर (महाराष्ट्र)

Ekkisavi Shatabdi Ke Pratham Dashak Ka Hindi Sahitya
Edited by - Dr.V.K. Bhalerao, Prof.B.P. Suryawanshi, Prof.P.L.Patil

अनुक्रम

संपादकीय ...

शीर्षक	लेखक का नाम	पृष्ठ
1) आज की कविता	डॉ.लक्ष्मण भोसले	01
2) इक्कीसवी सदी के साहित्य में स्त्री विमर्श	डॉ.अरूणा हिरेमठ	03
3) व्यवस्था का अक्स व दलित संघर्ष	डॉ.पंचशीला गोखले	05
4) 21 वी सदी के हिंदी साहित्य में नारी विमर्श	डॉ. अल्लाबक्श जमादार	07
5) प्रथम दशक की हिंदी कविता	प्रा.डॉ.शेषराव राठोड	11
6) 21 वी सदी के दलित काव्य में व्यक्त विद्रोही चेतना	प्रा.डॉ.सुभाष क्षीरसागर	14
7) तिरस्कृत आत्मकथा में दलित विमर्श	डॉ.मंगल कप्पीकेरे	17
8) इक्कीसवीं सदी - स्त्री-विमर्श	प्रा.डॉ. मा. ना. गायकवाड	21
9) चाँद के आँसू उपन्यास में 21 वीं शती की नारी स्थिति	डॉ.सन्मुख मुच्छटे	24
10) 21 वी सदी के प्रथम दशक की स्त्री कविता में स्त्री	प्रा.डॉ. प्रदीप सूर्यवंशी	27
11) हिन्दी कविताओं में युग-चेतना	प्रा.दिलीप रामराव गुंजरगे	30
12) उषा प्रियम्वदा कृत भया कबीर उदास उपन्यास में नारी विमर्श	डॉ.एमेकर एन.जी.	33
13) अल्मा कबूतरी उपन्यास में आदिवासी स्त्री की त्रासदी	प्रा.डॉ.संतोष येरावार	35
14) मालती जोशी की कहानियों में नारी विमर्श	प्रा.डॉ.वीरश्री आर्य	38
15) स्त्री-विमर्श के परिप्रेक्ष्य में इक्कीसवीं सदी का प्रथम दशक	डॉ.रामकृष्ण बदने	41
16) 21 वी सदी के प्रथम दशक में कविता में स्त्री विमर्श	डॉ.पुष्पा गायकवाड	43

अल्मा कबूतरी उपन्यास में आदिवासी स्त्री की त्रासदी

प्रा.डॉ.संतोष येरावार
देगलूर महाविद्यालय,देगलूर

आदिवासी जीवन केंद्रीत उपन्यासकारों ने तटस्थता और विश्वास के साथ पात्रों, समस्याओं, मानसिकताओं, उपेक्षांओं, आकांक्षाओ और अभाव से निर्माण विकृतियों, विडंबनाओ, विसंगतियो तथा मानवीय संवदवाओं को उजागर किया है। वर्तमान हिंन्दी साहित्य मे मैत्रेयी पुष्पा का मे बहुमूल्य योगदान है। अल्मा कबूतरी मैत्रेयी पुष्पा का बहुचर्चित बुन्देलखण्ड के कबुतर आदिवासी जाति से जुडा उपन्यास है। जनमानस की पीड़ा, स्वर, त्रासदी और मानसिकता को मैत्रेयी पुष्पा ने अपने उपन्यास में उघाडा है। साहित्य के माध्यम से समाज में व्याप्त कुलूशित मानसिकता और विकृतियों पर तीखा प्रहार करना मैत्रेयी पुष्पा की खुबी है। समाज के शोषित, वंचित, अभावग्रस्त, और समस्या से घिरे हुए तबके को अपनी लेखनी के माध्यम से न्याय देने का प्रयास मैत्रेयी पुष्पा ने किया है। आदिवासी वर्ग भारतीय संस्कृतिका परिचायक होने के बावजुद सदियोसे सुख - सुविधाओं से वंचित रहा है। अपनी मुलभूत अवश्यकताओं की पुर्तता करने के लिए भी उन्हे निरंतर संघर्ष और विरोध का सामना करना पडता है।

मैत्रेयी पुष्पा नें आदिवासी जीवन से जुडे हुए पहलुओ को, समस्याओं को, मानसीकताको, तथा स्त्री कि दशा एवं दिशा को उजागर किया है। 'अल्मा कबुतरी' आदिवासी कबूतरा जाति पर आधारित उपन्यास है। समाज के मुख्य प्रवाह से कटी हुई कबूतरा जाति विषम परिस्थिती में गुजर - बसर करती है। संघर्ष, जहालत, तिरस्कार, अपमान, पीडा, मजबुरी, दु:ख, अभावपुर्ण जीवन, और आर्थिक निर्बलता आदिवासी कबूतरा जाति के स्त्री - पुरुषो के जीवन का अनिवार्य घटक है। दर - दर - भटकना किसी के भी खेत में डेरे डाले बसना और उपजिवीका के लिए मजबुरी में चोरी करना, या दारु की भट्टी लगाना यह बुन्देलखंण्ड की कबुतरा नामक आदिवासी जाति की विशेषता है। कबुतरा आदिवासीओंकी रीति, परंपरा, खान-पान, रहन - सहन, सभ्यता, विचार - धारा, वेशभूषा तथा संस्कृति को मैत्रेयी पुष्पा जी ने चित्रित किया है। कबूतरा आदिवासी जाति के माध्यमसे संपुर्ण आदिवासी जातिओं की वास्तविक परिस्थिति को उभारने का प्रयास लेखिका ने किया है।

कबुतरा जाति की आदिवासी स्त्रीयों की मजबुरी का फायदा अपने स्वार्थ, लालसा और वासना की पुर्तता करने के लिए उठाना यह सभ्य समाज की मानसिकता

रही है, इसी मानसिकता और कामवासना की पुर्तता के लिए मंशाराम आदिवासी स्त्री कदमबाई हो अपना शिकार बनता है। कदम बाई के कोमल, नशीली और कमसीन देह को पाने के लिए वह उसके पति की षडयंत्र से हत्या करता है और कदमबाई से धाखेसे शारिरिक संबध रख अपनी घिनौनी और विकृत चाल में कामयाब होता है, "वादे के हिसाब से वह पास आया, वह छाया को देखते ही मदहोश हो गई। गदराई हुई गेहूँ की बालें पेट को - गुद - गुद रही थीं। गुनगुनी बाँहो ने उसका बदन बॉध लिया। ... हाय, सदा घाघरा उतारता आता था, आज पहले चोली के बटन खोल रहा है। .... कदम ने घाघरा खुद ही नीचे सरका दिया। बंद ऑखों में अपने ही गोरे बदन की छाया जगमगाई। ऑखों पर रखे हाथो को उंगलियोंसे झॉकना चाहती थी की गर्म साँसो ने होठे पर कब्जा कर लिया। सारे डर भय दबाने की खातिर उसने अपने पुरुष कों भींच लिया|"[1] इधर कदम बाई के साथ मनसाराम शारिरिक संबध रख रहा था और उधर जंगलियाँ की अर्थी उठ रही थी।

अल्मा कबूतरी के पिता रामसिंह की हत्या डाकू करते है, तत पश्चात दुर्जन कबुतरा अहमा कबूतरी को धोखे से नारियों के व्यापारी सुरजभान को कुछ रुपयों में बेच देता है। अल्मा कबुतरी धीरज की सहायता से क्रुर एवं पशुतूल्य सुरजभान के कैद से भाग जाती है, और समाज कल्याण मंत्री, श्रीराम शास्त्री के घर में पनाह लेती है। अल्मा कबूतरी अपने आप को राक्षससम समाज व्यवस्था से बचाने के लिए अपना शरीर उपभोग के लिए मंत्री को दे देती है। अल्मा मंत्री जी के सामने नंगी खडी हो जाती है और अपने कांचन देह को मंत्री जी की बाँहो में समर्पित कर रखेल बन जाने को मजबूर होती है। अल्मा कबूतरी जैसी पढीं लिखी लडकी को भी समाज के कुछ घिनौने, वासनांध तत्व जीने नही देते है इस यथार्थ का चित्रण मैत्रेयी पुष्पा ने किया है। अल्मा कबूतरी जैसी पीडा भोगने के लिए अनेकों स्त्रीया मजबूर है। आदिवासी कबूतरा समाज में नारी की स्थिति अत्यंत दयनीय है। कदमबाई और अल्मा कबूतरी दोनो जीने के लिए संघर्ष करती है और न चाहने पर भी रखेल बनने को मजबुर है।

'अल्मा कबूतरी' उपन्यास में मंशाराम से अश्लीलता की गंध आती है। वह अपने शरीर की भूख मिटाने के लिए कदमबाई को घिनौनी चाल से हासिल करता है। कदमबाई पति के हत्यारे से बार - बार शारिरिक संबध रखने के लिए मजबूर है क्युँ की वह उसके खेत में रहती है। और उसका कोई आधार नही हैं। "मंशारामा का हाथ जिस यात्रा को तय करने में लगा था, कदम उससे एकदम अनजान बैठी रही। छूना, निरखना, भींचना और चुमना उसने मंशाराम के हवाले छोड दिया।"[3] मंशाराम के कदमबाई के साथ अनैतिक संबंध के कारन पत्नी से हररोज कलह होता। "कदमबाई के साथ बदले की भावना ने आनंदी को अति क्रुर

बनाया|"[4] आनंदी के जीवन में भी अस्थिरता, असंमजस्य, विरोध और संघर्ष की स्थिति आती है। उसका पति मंशाराम उसे छोड कर कबुतरा बस्ती में जाता है। आंनदी भी अभाव ग्रस्त जीवन जीने को और पति के शोषन और अत्याचार सहने को मजबूर है। 'अल्मा कबूतरी' उपन्यास में भूरी भी प्रस्थापित और तथाकथित सभ्य समाज के विकृत और खोखली मानसिकता का शिकार होती है। 'भूरी' रामसिंह की माँ है जिसने आदिवासी नियमों के विरुध्द अपने बेटे के हाथ में हत्यार और शराब के बजाए किताबे थमाई थी। परंतु इसके लिए भुरी को कबूतरा कबिले के रोष का भागी बनना पडा तो दुसरी और कज्जा लोगो के नीचे बिछना पडा। भूरी ने अपने बेटे के उज्वल भविष्य के लिए अपने आप को बेचना तक पडा।

शराब बनाकर बेचना कबुतरा जाति का पैतृक व्यवसाय होने के कारन परंपरा के अनुसार पुत्र को वह व्यवसाय ही करना पडता है, अगर कोई नकारता है तो जाति से उसे बहिष्कृत किया जाता था। "उसका दारु बेचना, चोरी करना, बार-बार जेल जाना .. हमारी बिरादरी का कारोबार यही है|"[6] कबुतरा जाति के लोगो का मुख्य व्यवसाय शराब बनाकर बेचना, चोरी, डकैती और लुटमार होने के कारन पुलिस के भय से पुरुष वर्ग अधिकतर अपने स्त्रीयोंसे दूर जंगलों में जाकर बसते जिससे स्त्रीयों को सदैव दुख भरा जीवन जीना पडता। या अपनी आवश्यकताओं की पुर्तता करने के लिए कज्जा लोंगे की रखेल बनना पडता कदमबाई और अल्मा कबूतरी की तरह। 'अल्मा कबूतरी उपन्यास में कबूतरा जाति की स्त्रियों की अत्यंत दयनीय अवस्था ह। ना उन्हे समाज का सुख है ना परिवार का। कबुतरा आदिवासी जाति घुमक्कड जाति होने के कारण अस्थिरता, अभाव, दरिद्रता, दबाव, भय और त्रासदी भरा जीवन औरतो को जिना पडता है। अत: 'अल्मा कबूतरी' उपन्यास आदिवासी स्त्रीयों की त्रासदी की गाथा है। कदमबाई आल्मा कबूतरी, आनंदी, भुरी और गुनिया सभी व्यवस्था और पुरुषी मानसिकता के द्वारा कुचली जाती है। सभी स्त्री पात्रों को संघर्ष, जहालत और दुख भरा जीवन जीना पडता है। सभ्य समाज की वासना का शिकार कदमबाई और अल्मा कबूतरी को बनना पडता है जीने के लिए दोनो को रखेल बनना पडता है। आदिवासी स्त्रीयों के जीवन मे सुख-शांती यह दूर की कौडी है। मैत्रेयी पुष्पा जी ने आदिवासी जाति के लोकगीत, लोकनृत्य, लोक कथाएँ, लोकवाघ, लोकभाषर एवं लोक मान्यताओं के साथ - साथ आदिवासी स्त्री के वास्तविकता का अत्यंत सजीव चित्रण किया है।

संदर्भ सुची :

1) अल्मा कबूतरी, मैत्रेयी पुष्पा
2) हिंन्दे में आदिवासी केंद्रीत उपन्यासों का समीक्षात्मक अध्ययन, प्रा.बी.के. कलसवा 3) अल्मा कबूतरी, मैत्रेयी पुष्पा